

विनामरुतं दशमसात

विषय

विषयमिव शब्दो न स्यात्सात

विषयमिव शब्दो न स्यात्सात

विषयमिव शब्दो न स्यात्सात

विषयमिव शब्दो न स्यात्सात

विषयमिव शब्दो न स्यात्सात

दशमसात

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

II-222

[illegible][illegible]

कथायां मन्त्रं लपितुं यथैकः पूजाया यज्ञाया यार्थं ॥ धर्म्मं विविक्तलपितुं यथैकः ॥ अथ वाक् ॥
 यथा मन्त्रागनायुर्वैवाधिसत्त्वचयीचवस्तिवृद्धा रुगव हि मा माय नृपव मम स्य ॥ सफ यव यव
 सफ निषया यव मा विष्णु वधा का ध्यय ॥ गुरु र्दिवंग नृप य पिना अमृ क ना मे धया य वष जीव
 कृ लिक पिनु सद्य ना ध का स्वना समी सा सा मी सा सा का ध द धयः सर्वो य क व ध स हि ना सर्वः
 कृ सि न व जी ना य धि घ न न घ सा मि सय धा ध य दी प गं ध ने य घा दि सं यू क्ता दिवंग नृ अमृ क ना
 म स धा य व ध म वि कृ लिक पिनु य वा म नृ कृ ल जा ग्राः अयु जा य च वा श्रवा अत्स रा वि नृ या च
 नृ कृ ल कृ ल म म रू सो द रु न कि यी नृ नि य नो ना म पा ग्नी नि सं स्का च हि ना वि क न पि नृ मा य सं

२५ ऊ २ जी २

लस मना य वि क ल पि नृ सी य क्त्वा मि ल स म् ॥ हृ यां या र्थ वा क्त्वा स्नान पूजा ॥ उं त्रि वा द क ज्ञा
 व म नो य नि कृ स्त्रो ह्यो ॥ उं न मा रु ग व नृ स व इ नृ नि य वि ल स म नृ ज्ञा य न था ग ना या इ नृ न स म
 र्ज व द्या य न घ था ॥ उं ल स ध न २ वि ल स ध न २ सर्वो य वि ल स ध न कृ द्ध वि नृ द्ध दि व ग नृ अमृ क ना
 म स धा य उं सर्व क म्मा व नृ वि ल स ध न स्वा हा ॥ ली र वा ॥ उं कं क नि २ वा व नि २ प्रा व नि २ प्र मि रु न
 रु न २ सर्व क म्मा य नृ म वा नि सर्व स त्वा नी स्वा हा ॥ सा इ इ ३ इ ॥ उं अ मा धा यो नि रु न रु न २ सर्वो व नृ
 न वि ता स नि रु न २ रु रु स्वा हा ॥ ध ३ ॥ उं वा धि स त्व प्री न न स्वा हा ॥ य न क स्ति ॥ उं न मा रु ग व
 नृ अमृ न क रु ना जा य न था ग ना इ नृ सी म् र्ज व द्या य या दि र्म ध ॥ उं पृ ध म २ म हा य पृ ध म

दि० ॥ ली० ॥ गी० ॥ द० ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥
 सिधु ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥
 ऊऊमगारं मूनेरमहामूनेस्वधा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥
 स्वधा ॥ नंवायहिंवायमनास्वाने ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥
 ज्ञाविबहुलायस्वधा ॥ स० ममि ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥
 यक ॥ वाक्कक्षयायाथ ॥ समयः मध्यः मनेवियक ॥ अष्टलास्याः चष्ठावादनः मुनि ॥ ॐ
 धामनथागनायामनूरुलायाः सम्यक्वाक्षः गंधाहंपविनामयां निरूपयविष्णमयामि ॥

गा ३

न

विद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥
 पुष्टुलिकार्कः सर्वरुक्मनात्मकः समनुरुदसास्वार्कः ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥
 सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥
 यामिनायक ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥
 सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥
 चलयामिनायक ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥
 ऊऊ ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥ ॐ सर्वविद्वज्जीवसुखा ॥

श्रीमानसिधन २

खानमनक ॥ ॐ मन २ न हामने खाहा ॥ ॐ शकुमालको ॥ ॐ शकामृथमहाधाल
 शकामृथमहाधाल ॥ ॐ शकामृथमहाधाल ॥ ॐ शकामृथमहाधाल ॥ ॐ शकामृथमहाधाल ॥
 यविलम्भधनराजायद्यादि ॥ ॥ धनः लखः इहः धनः धनलकसिः मयः मृतः
 काजगतिविधयः आचार्यनः मखनरूपक ॥ ॥ सुकृतमः सः अद्यद्यादि ॥ ॥ यूपमः
 विधायनः ॥ ॥ यथामः नथगनापूर्वकाधि सत्ववश्याचन ॥ ॥ शिवद्वारगवहिमाणा
 ॥ ॥ यूपमः सफः यूपमः सफः निधायः यूपमः विधायनः कास्यपलमः
 ॥ ॥ यूपमः यूपमः यूपमः यूपमः यूपमः यूपमः यूपमः यूपमः यूपमः यूपमः

[illegible]

सङ्कनयावकवदवनाः येयः अग्निः समानाः विबलननियामैः पिबुरावकाडाः कोः
 यलाससकनां डायकः यजार्हद डाननयकः ॥ यनीलिधूपनदूयकवाकः ॥ ३ सावाः
 दुःकथनीलिकथनी ३ इलावाकमनु ॥ ३ सर्वविध उधूपस्वध ॥ मगनदूयक
 ॥ ३ बले २ मलाबलः बलसखवबलकिबलः बलमालाविष्णुध्व ॥ ३ धय २ दिवग
 नयप्रतियगा ॥ अमकनामध्यायः नस्यसगानिमानदधीनायः इन्नामिमाग्निविनि
 मूकाय ३ अमनग ३ नस्यध ३ ॥ ३ सर्वविध उधूपस्वध ॥ यनीसिङ्गलगाः
 दापोसः सल्लकृमः लीखनस्यः दूयकः ॥ अथवाकः ॥ ३ यावक सर्वसत्वा ॥ पर्वव

यथापदानयजाः शानाकलः क्रमायनविसङ्कनः पिबुरासर्वयक ३ य ॥ लिङ्गाडासंलिः
 श्रीवल्लखनहायः वसुधाउसवडेथिय ॥ अमयजाः दक्रिदायामीषविय ॥ ३
 इनिपिबुक्रियाविधिसमाय ३ ॥ ३ ॥ यदि उर्ध्वमउर्ध्ववा ३ धनीयमद
 ३ ध ॥ ॥ २ लोकोरुलजाधेल ३ लसाः दयाकलसपूजाधसंलिः पाकः
 वासनवसः वार्षियजार्हलः मगरुमागाः धडवा ३ धयकसिधुडः ३ ३ लीखः ३
 यादिगयाडाः यजार्ह जापयकः संक्रफ ३ गुबम ३ लदनक धनकाडाः लफसहा
 ल्लः ३ ३ लीखनस्यः अथवाक ३ ध ॥ लफलायकः ३ ३ स्वसिचयक नयकः साः

आसराथनपिण्डलडाहानकः अथवाक्ययवैवहसकल्ययासंगयकलकसः धनक
 अथगिकाहासुविसंः अथवाक्ययासंवाक्यया नास्वाचकः धनकाडाजिबलः मन
 लमामाः पूजायाचकः विधिधर्मः धर्मालिः कदाहासुविसंः अथवाक्ययासंः साद्रिथ
 चकः ॥ वदुधर्मः संघः सखावगिलार्कस्वतः वडः सूर्यः अग्निः गंगः पृथिमामाः एम
 मामाः पुमिसादिदवतागुरुः धर्मसाद्रिथावकः जंगुलिहानकः उरुविकाषायक
 ॥ यः लोहं मः ॥ धनवडः अथवायनं जाडाः वाक्ययासंः ऊऊमानः वडः
 स्नानयाचकं पूजायामकः धनकाडाः गुरुवडः सत्त्वधायकः ॥ यैः लौः धैः सः ॥ ॥ ॥

साद्रि ?

नकगावाथयकः धर्मालिः निपालालानिर्नः कायडिडि कायकाडाः कदाहासुः सं
 खलेश्वरः अथवाक्ययासंः पिण्डुथयकः आजाडः अवरुः विकल ३ विकलपि
 दुनयकं नः जंगुलिः उरुविः रियकमालः दलपासुनयकः ॥ पर्ववहः स्त्रीकः
 कोलेश्वरः कथं धर्मपिण्डुपूजायामकः ॥ धनकाडाः मधुलाथिलकः स्त्रीकनकः
 सकलसनीकिमिनः सकगांमूनकाडाः कदाहासुनसंः गमिवियकः अथवायनी
 ईश्वरः लेश्वरः कदाहासुनसंः वियमालः ॥ इलपापयडाः हानेलेश्वरमयः यैः लौ
 धैः सः ॥ ॥ अगंवाक्ययः सकगांयकः नासलानः नाम्नादिः दद्रिधमः

इत्यादि ।

स्वयं कः भगवत्पुत्रः जगन्निर्वाहकः लविस्त्रियः नयायकः वेद्यादिदत्तज्ञः ज्ञानियाच
 करिष्ये नृणां नायाचकः राजकः सकलां दायाः कोपलासगयकः धूपं यकम
 नंदयकः सिद्धनासापंजलधालोदयकः पञ्चिमससाधुः ३थयकं वानासहा
 कययकः यक्षपलाचयूजाः थसपयकं लंखनयकः भगवत्कल ॥ ज्ञायाफः याः
 दिः ॥ विसर्जनवदनपिष्टुदायः ऊडमानं कोपलासुसंवाहः थनपिष्टुवः
 यकः कथयलिलाडासीलिः रवलेखनहायः चसयाः सवदनपिष्टु ॥ थनमह
 लथिलकः खाननकः सग्वनकः साहनिष्ठयकः चनयूजाः दक्षिणानेसलावा

चाकपडा २

पानः

धं कलहयः सुमखं साकरुजकविद्यमालः दगुसमयः समयाचकः कोलाः जाला
 ऊ ॥ धमांगमीनामलानयकः साकसिद्धयः स्वांकोकायकः यसादकायः मुखः
 सिकायः दानगमः जगन्निर्वाह ॥ २ ॥ किलाकोरुपिष्टुक्रियाविधिः ॥ ४ ॥ ॥ ॥
 १ ॥ लोकि कं पिष्टुयादक्रिष्ट ॥ २ ॥ कोलापानं ॥ लोकोरुजयापिष्टुलसाद
 रुयमालः कोलापानं ४ ॥ ॥ ॥ ॥ लयायापिष्टुथयः सगिखनसमा
 सपिष्टुथयमालः मथलसाः लयाकनपिष्टुथययूजाविधिधर्मीलिमलपिष्टुया
 लापुर्वगयः रुजाविर्सीसाश्चलुवनकः चोसवाहगुचरवधुकायकः वाक् न

४

शुभ्रादि ५॥ समसपिष्टं स्वध ॥ जाया जा जाया गुणिष्ठ स य न पुनर्क मयकः थगु क
मन नपा या जा जा जा जा स्वगल संकयकः यै लोः यै सुः न ॥ जना क्रन विरुते ॥ ५॥
॥ १॥ न गो अग्नि सध वान अ धिष्ठा न याय ॥ २॥ वज्र सत्त्व जा ॥ ३॥
४॥ मम ल कृष्णा दिद्या ४ पविष्ठा वध्र दवना वृद्ध धर्म सध नगा ४ पृथिवि जा मगा
गहो ४ सध वि द्य ४ किं व कां कवे नु स्वास्ति स्वादा ॥ कृष्ण गय स्वास्ति कजा का नव ॥
दाम सि पूजा या द ॥ दाम सि नन पूजा या य ॥ च दाम नन वीदि दको का स्य इय ॥ सिम नः
वज्र सहि ५॥ ७॥ अ स्य वाक्क या य ॥ स्वास्ति वक्र नगा वृद्ध स्वास्ति दिवा ४ ससक का ४ स्वास्ति सध

विदुतानि सध कात्रं दिष्टि रुव ४ वृद्ध पृष्ठा नन वन दवना नाम नन व ॥ या या थ सम ति
यन ४ सधो थ सध धर्मा ॥ स्वास्ति वा दि पद रा रु ४ स्वास्ति वा उ वरु ष्य द ४ स्वास्ति वा वः
जगां मा ग स्वास्ति पुण्या ग न व व ॥ स्वास्ति न गो स्वास्ति दवा स्वास्ति म धा दि ना स्ति न ४ स
वृद्ध स्वास्ति वा रु नु मा र्वे षा या प मा ग स ॥ सध मत्ता म धे पा सध सध रुगा व क व नो ॥ सध
व स र्व न स नु सध न नु न या न या ४ म धु न ॥ सध प ध रु सा क र्वे या प मा ग स न
॥ या नि रु रुतानि स मा ग तानि रु नानि रु सा व थ वा रु वी रु व क र्वे नु मे णी स न ग
पुजा स दिवा च रा णी च व न रु ध म ॥ अग्नि दी प दि द्या वि वा वि धः महा द्य य द य क

समाप्तुलं यामात्मानं सावयन् ॥ गन्तात्मानं कुरु चतुर्मुखं कुरु चतुर्भुजं यन्मिथ्यं च कुरु दक्षिणं च
न विदुः काननं नैदं कुरु कुरु विषयं यन्मिथ्यं च कुरु चतुर्भुजं नैदं विदुः काननं नैदं कुरु दक्षिणं च
मीनं वामं वलिना च चतुर्भुजं नैदं विदुः काननं नैदं कुरु कुरु विषयं यन्मिथ्यं च कुरु दक्षिणं च
यान्न वदन् वदन् चतुर्भुजं नैदं विदुः काननं नैदं कुरु कुरु विषयं यन्मिथ्यं च कुरु दक्षिणं च
चतुर्भुजं नैदं विदुः काननं नैदं कुरु कुरु विषयं यन्मिथ्यं च कुरु दक्षिणं च
चतुर्भुजं नैदं विदुः काननं नैदं कुरु कुरु विषयं यन्मिथ्यं च कुरु दक्षिणं च
चतुर्भुजं नैदं विदुः काननं नैदं कुरु कुरु विषयं यन्मिथ्यं च कुरु दक्षिणं च
चतुर्भुजं नैदं विदुः काननं नैदं कुरु कुरु विषयं यन्मिथ्यं च कुरु दक्षिणं च

वत्सु डाम्बुडिर्नं रविमधु लं वामदक्षिण सागयनिट रं वव कालिवागि वाम कर्त्तुं धूसु नरु गम्भावाली
 यत्तु नरु नं सावयम् ॥ रगवनि वरु वा नाहि वरु व धूसु क क मणि नं ग्रा उ क व क ग्रादि गम्भ वा रव
 धुमालु ममम बादि तु जावा बा तु ऊन र क पू धू क पा र ध वाः दक्षिण तु ऊन इरु मर्त्तु नि कर्त्तु का ४ सु
 वृद्धि लान नार्ज घाघ यन रुग व नं समागु घ अ न्नाग यनि ४ म माय वादि गम्भ ज कि नि वामा रव
 लु वा हा रूयि नि क र्त्तु धूसु म र क लो र्था उ क व जा व नु तु जां क या ल रव द्वा गः वाम क वा उ म र क र्त्तु दः
 क्रिष क वा ४ ड क वा ल व द ना ४ यं व म्बा वि रु पि ना ४ अलिरा स न स र्त्तु गा ४ वि दि ग्द ल म्भ वा धि
 वि रु क या वा नि पू र्वा धा रः का का ४ धा ४ क ४ ४ व को ४ धा स्या माः स्वा ना स्या र क्ता ४ म्भ क वा धा पि नाः

九

४ अथ एतयादि ४ अम उति रु विनाः अम इति वी म च काः अम उति रु विनाः अम म ध नि ॥
 म क हः अमा योगी न्या अ क व का च कु उ जा य ला ली र ए दा का का ४ सु वी स ना नी व स ना ४ य ४ म डा वी
 सु वि नाः क मा र व जा व लि वि सु वि ना ४ क या र व द्वा गः क रि उ म र ४ अ लि न्य ४ बो ड मू र्ख या वि ला य ४
 ॐ अ ह ४ सि र स्क ४ द य म वि ला य ४ ॐ अ ह ४ सर्व वि र जा गी नि का य वा क वि रु व ज स्व रा वा ल
 का र्द ॥ ॥ अ ग न्या स ॥ ॥ म मा स मा नि म हान च क मा का म द हा द ह्य ४ ४ ४ व द
 ४ अ त्म नि म तु ल्य वा क ४ य ४ ॐ अ ग म द्वा स र्व ध म्मा अ ग म द्वा ह ॥ म द नू अ रि वि र कु मी ॥ स
 र्व वि र जा गी न्य ४ ॐ श्री ह नू क व ज स्व रा वा ल का र्द ॥ ॥ अ रि ष क ॥ ॥ अ थ रि जा त्मा

क न त्या दि ॥ अ रि ष क म ला व र्जः ने धा रु के न म ह नः इ षा क यू ज ना थ य म कू ट य च क ला रु वी ॥ ॐ सु व व
 रु च ग म शि म ला म क मा रि ष ४ ॥ ॥ म क मा न या य ॥ ॥ ॐ व ज धा न स्व लि अ रि वि ष ४ ॥
 ॐ स त्व व डी म रि वि ष ४ ॥ ॐ व त्व व डी अ रि वि ष ४ ॥ ॐ ध म्मा व डी अ रि वि ष ४ ॥ ॐ क म्मा व डी अ रि
 वि ष ४ ॥ अ थ रि ष क म ला व र्जः ने धा रु के न म ह नः इ षा क यू ज ना थ य म कू ट य च क ला रु वी ॥ ॥ व ज का
 य ॥ ॥ व ज रि वि ष ४ ॥ य नि त्व म रि वि ष ४ ॥ म रि वि ष ४ ॥ व ज स म य स्त ४ ॐ व ज य र्जः स लि म ४ ॥ ॥
 य ४ का य ॥ ॥ ॐ व ज स त्व म रि वि ष ४ ॥ व क ना मा रि ष क मः इ षा रु व क ना म न थ ग रु ४ ४ रु व स्व
 ४ ॥ ॥ ता म च न न नि य ॥ ॥ य र्जः व ज का क र्प न ४ पा धा दिः य ष न्या स ४ य ४ य र्जः व ज का

धी दमला स्या घष्ठा वादन मुनिमनु कथयन ॥ इति दिव्य राजाग ॥ ॥ गंगा जालिकालिय कि प्रचरम् ॥
 कान्तु लदवगा दपानुज्ञाचय कृदक्रि धवायुनाः नीरुयुङ्ग गमिचकी रुखः अनादि सी सिद्धि वीरवीर
 सि समर सिद्धिमानः वामना सायन पृष्ठः नाशोय निर्विघ्न स्वका नाच उ मलु सीरुमाना विचि स्रगवः
 मृटि निष्ठु कुरु कावः मत्र उवी जयली गमरुगर्वकः सरुङ्ग सचरैः रुक्म व द्युमालि रासनरु ॥ आका
 सचिदमदमदि उज्जम कवर्कः वज्रवज्र घष्ठा धर्व उरुया र्थाः वज्र कया लभालिनिधि उज्जः एक मुरिवः
 वक्रवज्र वाराहिः समायन विराय ॥ गयामाया मचमध्वनि समाहृष्टः मेधातु कात्मकः वक्रकम
 नरावयम् ॥ उगमिष्ठम न्यषुष्ठममानि समयवर्कः समयवर्कः ॥ काका र्थादि रुकाका र्थाद

यम् ॥ आकि न्यादि रुकाकि न्या दयम्वरुगवसो दि उज्ज ४ मयु र्हाया ४ युनिष्टा रावनि या ॥ मच समसच
 मः मला डागदवर्धनः नदवयविमर्गः सिद्धाचक मका रुचसीष्ट रुक्म कावः मलामुख मयिहावयम् ॥
 मकुज कावज कावः रुका लरुका र्थ निचमि वा र्धवदः अर्धवद विरुविद नाउ विलिन र्धनी नीवाचा
 गुः समरु र्मः लागवर्ध विमथम् ॥ विरु कल्पक मला सख मयि विरु निचययम् ॥ पुन ४ सखाथमः
 टिमिमलु लै ४ मभि मरु ॥ ॥ एव वरु आ कथन ॥ पृथ न्यासः यवपरावयुजा वा स्या घष्ठा वा
 दनमुनिः मनु कथयन ॥ ॥ इति मरु जाग ॥ ॥ मनु जाय ॥ ॥ एव वरु आ कथन ॥
 पृथ न्या सपक्ष परावयुजाः वा उ सला स्या घष्ठा वा दनमुनिः मनु कथयन ॥ ॥ इति जायजी

वदधर्मसंघसूत्रावनिः लाकं ध्वजः स्तुतनायामकं ॥ विधिः पञ्चा ॥ धनकृमलान्नविमः सांकी धर्मकः
अथ वाक्यासं सांकी धर्मकः रुमपूरनियूरनयकः जयसमयकयूर आसनयामकयूर ॥ धनलिः कृमलक
लायक ॥ अथकासं वाक्य ॥ उं नमो रगवर्ग सर्वइमेमियवि ॥ अधनबीजाय ॥ यथा मम धमगनायुववाधिसत्ववर्था
वनरिवाधिसत्वारुगवर्हिमागपिरु पूर्वगमत्य ॥ सकयूरधर्य ॥ सकनिष्यत्य ॥ यथा मारिधाय ॥ लाक्यप
उमगत्य दिवंगमयथा मारिमा अमक नाम ध्याय यमगना ॥ यथा वषमवकु लिकपि सुपान नाथं कृमलान्न
संप्रध्यामि कर्मिर्गना अथ ॥ अधमयथा मम धमगना यौ पूर्ववाधिसत्ववर्था विवरिवाधिसत्वारुगवर्हिमागपिरु
पूर्वगमत्य ॥ सकयूरधर्य ॥ सकनिष्यत्य ॥ यथा मारिधाय ॥ लाक्यप ॥ नमवाक्य नपनासनः

संपन्नानि ॥ ३ ॥ अथ सिद्धिं न वा ॥ अथ सिद्धिं न वा ॥ लक्ष्मीं सती रत्नं लयक ॥ ३ ॥ वसुधैवि कुटुम्बक ॥ ३ ॥
लाला नन अविष्टा नया नक ॥ नमा आका ॥ सर्वदेवतादिहिरण्यगर्भा ॥ लवर्हिनी कर्षुदवा नागस
बायका गन्धर्वा नमदा रगा रुनायगायि ॥ वाशा ॥ सर्व बागयपुत्रय ॥ सर्वपुत्रायपुत्रय ॥ वृक्षानागु ॥
वरुनी ॥ अहा वृक्ष ॥ सा भूवृक्ष ॥ कारु म ॥ सर्व इन्द्रिय विष ॥ ३ ॥ सर्वानां विषाया न ॥ नवर्क धन वि
य ॥ मरु कदीर्घा युवनि बा मृत् ॥ दक वृक्ष का नार्च ॥ सगर्भे पाथ ॥ ॥ अथान्या नगना सर्व
धर्मा ॥ यत्र स्ये नान् विष्टा सर्वधर्मा ॥ अथे नान् युनी विष्टा सर्वधर्मा ॥ ३ ॥ वरु वं धर्व ॥ ३ ॥ सर्व विष्टु वं धर्मा
३ ॥ ३ ॥ दृष्ट वरु वं धर्व ॥ मरु व ॥ ३ ॥ सा नान् मरु व ॥ दृष्ट वं मरु व ॥ अविष्टु न ॥ सर्वसि ॥ अदि मय य ॥ ३ ॥ ३ ॥

रुगवन्निष्ठवज्रसमयः वज्रावमज्ज ४ ऊँ ४ वहा ४ ॥

॥ धर्माधिपुत्रवज्रजानकदीक्ष ॥ यथाग

मः ॥ गमायववाधिसत्त्वचय्याचरि ४ वृद्धा रुगवदि मोजायिह पूर्वगमस्य ४ सफयवधस्य ४ सफनीष
य ४ यथागमाविष्मरक्षकास्ययं ॥ गं ४ र्यादिवगमयथायिना अमृकनामध्याययं नगनाथव ४
नस्यवकसीवकुलिकयि ४ सयना ॥ अधका सर्वनासमासा सामासा साकाभदधय ४ सययिकचन
सदिताः सर्वकसिगवकिं कयचिद्यमः नयस्यामिसयुषधयदियः ॥ गभनेयद्यादि सयकं दिवगम
युष्यासिना अमृकनामध्याययः वर्षसीवषलिकयि ४ सयुष्मासिसोखावस्यलिका कथाहुमनग
कु ४ ॥ अधमं ॥ ॥ आयाका जाइः नयाका जाइः आजाइः धमि ननि गवशयि लुधयः

क ॥ स्थावरावशमयक ॥ धनजर्घासवाकगुः लेखनयक जरा लीखावा कन ॥ ॐ नमो रुगवन्सर्वे इमे की
यवि ॥ अधनवाजायः नयगमाया ४ रुकं सम्यक् वृद्धाय ॥ नयथा ॥ ॐ अधनं २ वि ॥ अधनं २ सवेयायः
वि ॥ अधनः ४ वि ॥ वि ॥ दिवगमयुष्मन्नायिना अमृकनामध्याययः सर्वकमावचनवि ॥ अधनं स्वाहा ॥
साइइमय ॥ ॐ कं कनिश्चावनिश्चावनिश्चानिरुतः रुव २ सर्वकमावचनवि ॥ अधनं स्वाहा ॥ धलिम
॥ ॐ अमाघायिनिरुतः रुव २ सर्वकमावचनवि ॥ अधनं स्वाहा ॥ धलकमि ॥ ॐ वाधिसत्त्वयोननस्वध
॥ धम ॥ ॐ नमो रुगवन्सर्वे इमे की ४ रुकं सम्यक् वृद्धायः नयथा ॥ ॐ अमृकं २ अमृ
काव ४ अमृकं २ रुव ४ अमृकविका नगमिनः अमृकस्य नामध्याययः सर्वकमावचनवि ॥ अधनं स्वाहा ॥